ISSN 2278-8808 SJIF 2014 = 4.889
An International Peer Reviewed & Referred
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL
FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

CHOOL INSPECTION (HINDI SKIT-FOR SEWAK DAY)

Bhujbal

Scholarly Research Journal's ***is licensed Based on a work at*** *www.srjis.com*

ACT I

Scene 1: INT: क्लासरुम

'सेवक पाठशाला'लिखा बैनर दीवार पर लगा है , साइड में वर्ल्ड मैप लगा है। एक टेबल पर रजिस्टर और छड़ी रखी है, एक कुर्सी भी साथ में रखी है। बच्चे शोरगुल कर रहें हैं।

मास्टर एक हाथ में किताब लेकर लंगड़ाते हुए दाखिल होता है।

मास्टर:- ऐ ... शांत रहो।

बच्चे:- गुड मार्निंग सर।

मास्टर:- गुड मार्निंग।

(मास्टर जैसे ही कुर्सी पर बैठने की कोशिश करता है , एक लड़का कुर्सी खींच लेता है जिससे मास्टर गिर जाता है।)

मास्टर:- (डांट लगाते हुए) तुं मुर्ख है क्या ? (टेबल से छड़ी उठाकर पीठ पर बजाते हुए) चल कान पकड़!

(लड़का मास्टर के कान की तरफ हाथ बढ़ाता है।)

मास्टर:- (डांटते हुए) अबे, मेरे नही, अपनें कान पकड़!

(लड़का अपने कान पकड़ लेता है। मास्टर कुर्सी पर बैठ कर रजिस्टर खोलता है और हाजिरी लेना शुरू करता है।)

- होशियार सिंह

- यस सर
- अमरीक सिंह
- जी, सर
- फुलतुड़ु सिंह
- हाजिर श्रीमान
- तोता राम
- जी सर
- रलिया राम
- उपस्थित श्रीमान

मास्टर:- रलिया, तुं कल स्कूल क्यों नही आया था?

रलिया:- मास्टर साब, कल मैं गिर पड़ा था, लग गयी थी।

मास्टर:- कहाँ गिर पड़ा था, ... क्या लग गयी थी?

रलिया:- मास्टर साब, बिस्तर पर गिर पड़ा था, नींद लग गयी थी।

मास्टर:- (छड़ी लगाते हुए) हप! ... बैठ।

(रलिया बैठ जाता है।)

मास्टर:- ठीक है बच्चों, सब शांत होकर बैठो और मेरी बात सुनो।

बच्चे:- यस सर/ जी सर।

मास्टर:- कल स्कूल इंस्पेक्टर यहाँ आएगा, आप खुराफात थोड़ा कम करना और वो जो सवाल पुछे उसका जबाव ठीक-ठीक देना।

बच्चे:- जी सर।

मास्टर:- और सुनो, कल होशियार सिंह और अमरीक सिंह यहाँ नही आएंगे।

(होशियार सिंह और अमरीक सिंह पीछे खुसर-पुसर करतें है।)

होशियार सिंह:- चल बे, कल हमारी छुट्टी।

अमरीक सिंह:- ना-ना, आना तो पड़ेगा, क्या पता कल मिठाई बटे यहाँ और मास्टर हमारा हिस्सा मार ले।

होशियार सिंह:- ठीक है यार, हम चुपचाप आकर पीछे बैठ जाएंगे।

- पर्दा गिरता है

Scene 2: INT: क्लासरुम

घंटी की आवाज के साथ पर्दा खुलता है। बच्चे शोरगुल कर रहे हैं। स्कूल इंस्पेक्टर का प्रवेश।

स्कूल इंस्पेक्टर:- शांत,... बच्चों। ... मास्टर साहब कहाँ हैं?

फुलतुड़ु सिंह:- ... सर, ... कोई आने वाला है, मास्टर साब दारु लाने गयें हैं।

स्कूल इंस्पेक्टर:- है? ... क्या स्कूल है! ... दारु?

बच्चे:- जी सर।

स्कूल इंस्पेक्टर:- अच्छा , आप लोग शांत हो जाओ। मैं कुछ सवाल पुछुंगा , आप उनके जबाव दो।

बच्चे:- यस सर!

स्कूल इंस्पेक्टर:- अच्छा ये बताओ आपमें होशियार कौन है?

रलिया:- सर, होशियार मैं हुँ। मैं क्लास में फर्स्ट आता हुँ।

होशियार सिंह:- (शर्ट खींच कर बैठाते हुए) ऐ बैठ। सर , होशियार तो मैं हुँ , मेरा नाम होशियार सिंह है।

स्कूल इंस्पेक्टर:- अच्छा अच्छा! (छड़ी से मैप की तरफ इशारा करते हुए) आप बताओ - अमरीका कहाँ है?

होशियार सिंह:- सर, ... अमरीका? ... वो तो बाथरुम में छिपा है .. , इधर आया ही नही।

स्कूल इंस्पेक्टर:- हैं .. ? (छड़ी टेबल पर पटकते हुए) अच्छा ठीक है, तुम बैठो।

स्कूल इंस्पेक्टर (फुलतुड़ु कि ओर मुड़कर):- अच्छा बेटे , आप खड़े होकर बताओ , आप बड़े होकर क्या करोगे?

फुलतुड़ु (खड़ा होकर):- सर, शादी।

स्कूल इंस्पेक्टर:- नही .. नही, मेरा मतलब है, बड़े होकर क्या बनोगे?

फुलतुड़ु:- दुल्हा बनुंगा।

स्कूल इंस्पेक्टर (खीज कर):- ओहो , I mean to say तुम बड़े होकर क्या हासिल करना चाहते हो?

फुलतुड़ु:- सर, दुल्हन!

स्कूल इंस्पेक्टर (गुस्से से):- अबे , मतलब बड़े होकर मम्मी-पापा के लिये क्या करोगे?

फुलतुड़ु:- बहू लाउंगा, और क्या?

स्कूल इंस्पेक्टर (अब चीखते हुए):- हरामखोर , तुम्हारे मां-बाप तुम से क्या चाहते है?

फुलतुड़ु (हकलाते हुए):- प .. पोता।

स्कूल इंस्पेक्टर (सर के बाल नोचता हुआ):- हे भगवान .. , अबे जिन्दगी का क्या मकसद है?

फुलतुड़ु सिंह (दो अंगुलि दिखाते हुए):- सर, हम दो हमारे दो .. ।

स्कूल इंस्पेक्टर (गुस्से से पागल होता हुआ):- अबे .., बैठ .. बैठ .., बैठ जा तूं।

फुलतुड़ु सिंह (बुदबुदाता हुआ):- मैं तो बैठा ही था, आपने ही तो खड़ा किया मुझे।

(तभी मास्टर हड़बड़ाते हुए क्लास में दाखिल होता है।)

स्कूल इंस्पेक्टर:- जी, आप कौन हैं?

मास्टर:- जी .. जी, मैं .. मै, इस क्लास का चीटर हुँ।

स्कूल इंस्पेक्टर:- अच्छा , आप टीचर हैं! क्या पढ़ाया है आपने इन्हे ? इनका डिस्सीप्लिन भी ठीक नही है।

मास्टर:- नहीं सर , ये तो बहुत अच्छे बच्चे हैं। सारा कुछ जानते हैं। इनका सिलेबस भी कंप्लीट है। आप पुछिये, सर!

स्कूल इंस्पेक्टर:- (रलिया की तरफ ईशारा करते हुए) अच्छा आप बताओ , द्रौपदी का चीरहरण किसने किया था?

(रलिया चुपचाप सर नीचे झुका लेता है।)

मास्टर:- हाँ-हाँ, बताओ रलिया बेटे, द्रौपदी की साड़ी किसने खींची थी?

रलिया:- (स्कूल इंस्पेक्टर की तरफ देखता है फिर सर नीचे झुकाते हुए कहता है) सर, पिता जी ने!

मास्टर:- क्या बोलता है?

रलिया:- सर, द्रौपदी मेरी माँ का नाम है।

स्कूल इंस्पेक्टर:- अच्छा!? (मास्टर की ओर आश्चर्य से देखते हुए लड़के को बैठने का ईशारा करता है।) बैठो!

(फिर तोताराम की तरफ ईशारा करते हुए) अच्छा ये बताओ , शिव जी का धनुष किसने तोड़ा?

तोताराम:- धनुष? (आश्चर्य से) .. क्या मालूम! हम तो स्कूल आए ही नही थें , .. छुट्टी पर थें, सर!

स्कूल इंस्पेक्टर:- (होशियार की ओर ईशारा करते हुए) तुम बताओ, क्या जानते हो?

होशियार सिंह (रुँआसा होकर):- मैं कुछ नही जानता , सर! मैं तो सबसे सीधा हुँ , मैनें धनुष देखा भी नही! ये तो हर चीज में युँ ही मेरा नाम लगा देतें हैं।

स्कूल इंस्पेक्टर:- क्या मास्टर साहब? बच्चे तो कुछ जानते ही नहीं!

मास्टर:- सर, बच्चे है, टुट गया होगा गलती से। कुछ ले-दे कर फिक्स कर लेंगे , सर। चलिये ना , कुछ पीने-खाने का भी इंतजाम किया हुआ है। बच्चे भी आपके लिए कुछ लेकर आए हैं, सर।

स्कूल इंस्पेक्टर:- आप मुझे रिश्वत देना चाहते हैं?

मास्टर:- नहीं सर, ये तो प्यार है जो हम आपके साथ बाँटना चाहते हैं!

(एक बच्चे को देने का ईशारा करता है।) दे ना!

(बच्चा उठकर एक बरतन स्कूल इंस्पेक्टर को पकड़ा देता है।)

सर, आपके लिए।

स्कूल इंस्पेक्टर:- क्या है ये?

बच्चा:- दूध है, सर।

(स्कूल इंस्पेक्टर डब्बा लेकर पीना शुरू करता है , पर मुँह लगाते ही थू-थू करने लगता है।)

स्कूल इंस्पेक्टर:- ये दूध है? .. कहाँ से लेकर आया है?

बच्चा:- सर, रात में बिल्ली आधा दूध पी गयी थी , माँ ने कहा - बांकी फेंक मत, मास्टर साब के लिए ले जा - उसको क्या पता बिल्ली का जूठा है!

(स्कूल इंस्पेक्टर डब्बा नीचे गिरा देता है।)

मास्टर:- अरे, तुँ मेरे लिये जूठा दूध लेकर आया था!

(मास्टर लात मार कर डब्बे को फेंक देता है। बच्चा इसपर जोर से रोने लगता है।)
स्कूल इंस्पेक्टर:- क्यों रो रहा है अब, चुप हो जा?
बच्चा (सुबकते हुए):- सर, मेरा छोटा भाई रात को इसी डब्बे मे पेशाब करता था , आपने फेंक दिया, अब किसमें करेगा?
स्कूल इंस्पेक्टर (हिकारत से):- क्या .., इसी डब्बे में?
मास्टर:- सर, बच्चे हैं सर! ... नासमझ हैं, इनकी कोई गलती नही।
स्कूल इंस्पेक्टर:- हां-हां, गलती तो आपकी है जो आप बच्चों को पढ़ाने कि बजाय उनके घर से सामान मंगवाते रहते हैं। गलती हमारी भी है कि हमने आप जैसे शिक्षक बहाल कर रखे है इन नौनिहालों के लिये!
मास्टर:- आप गलत समझ रहे हैं, सर! ऐसा कुछ भी नही है! आइये ना, मिल बैठ कर सेट्टल कर लेते है यहीं पर!
स्कूल इंस्पेक्टर:- बहुत खराब माहौल है, मै इसकी कंप्लेन शिक्षा मंत्री तक करुंगा।
मास्टर:- अजीब अहमक हैं! देखते है क्या कर लेते है आप भी! शिक्षा मंत्री तो मेरे जीजा का साला है! जाइये जरुर किजीये! कहाँ-कहाँ से चले आते है, सब!
- पर्दा गिरता है

Scene 3: INT: शिक्षा मंत्री का दफ्तर

शिक्षा मंत्री कुर्सी पर बैठा पान चबा रहा है। स्कूल इंस्पेक्टर पास में खड़ा है। मंत्री ईशारा करता है, एक अर्दली थूकदान लेकर आता है।
शिक्षा मंत्री (थूकदान में पीक थूक कर):- हुँ .. !
स्कूल इंस्पेक्टर:- बहुत खराब हालत है सरकार!
शिक्षा मंत्री:- आतो .., बैठिये ना पहिले!
स्कूल इंस्पेक्टर:- सर , मै तो हक्का-बक्का हुँ , बच्चों को ये तक मालूम नही कि शिव का धनुष किसने तोड़ा!
शिक्षा मंत्री:- हुँ!
(अर्दली को आवाज लगाकर)
ऐ .., जरा पीए साहब को बुलाना , स्कूल को पीछले तीन साल में क्या-क्या ईशु हुआ, उसका लिस्ट लेकर आयेगा।

(पीए लिस्ट लेकर आता है।)

पीए:- सर, ये रहा लिस्ट!

शिक्षा मंत्री:- हाँ, तो पढ़िये ना .. क्या-क्या ईशु हुआ है? अभी हम दुध का दुध और पानी का पानी कर देते है!

पीए:- सर, टेबल, कुर्सी, पिढ़िया, ब्लैक बोर्ड, खल्ली ..।

शिक्षा मंत्री:- हप! अरे, इसमे शिव का धनुष है का?

पीए:- नही सर, इसमे तो शिव का धनुष है ही नही!

शिक्षा मंत्री:- लो .., देखो! (स्कूल इंस्पेक्टर की तरफ देखते हुए) का जी ? यही सब गलत-सलत बात पुछते है, बच्चा सब से?

स्कूल इंस्पेक्टर:- सर .. ?

शिक्षा मंत्री:- हप .. ! अरे , जब इशुए नही हुआ है तो तोड़ेगा कौन ? ऐसेही मास्टर को भी बुरा-भला कहता है ..! अरे , ऊ तो हमरे साले का जीजा है! ... तुम ऐसे ही इतना कह रहा था!

स्कूल इंस्पेक्टर:- सर, गलती हो गयी।

शिक्षा मंत्री:- का गलती हो गयी .. ? अरे जब शिव का धनुष हम इशुए नही किये त उसको तोड़ेगा कौन .. ? सेवक पाठशाला को भी बदनाम करता है , नौकरिए हम ले लेंगे .. !

स्कूल इंस्पेक्टर:- (घबरा कर) नह .. नही सर!

(शिक्षा मंत्री के पांव पर गिरने लगता है।)

शिक्षा मंत्री:- हप .. ! हप .. !! हप .. !!!

भ्रष्टाचार..भ्रष्टाचार..

घोषणा: "एक दो तीन चार...नानाजीका जयजयकार"

"ले जायेंगे ले जायेंगे "बिल"वालेही बिलको ले जायेंगे"

"भ्रष्टाचार मुर्दाबाद.. भ्रष्टाचारी मुर्दाबाद"

(राजा दिवाणखान्याच्या बाल्कनीतून बाहेर नजर टाकतो.)

राजा: कोण आहे रे तिकडे? हा काय गोंधळ चाललाय? ताबडतोब प्रधानजींना पाचारण करा.

(दुपारची झोपमोड झाल्याने चेहेऱ्यावर आलेल्या त्रासिक भावांना कसेबसे लपवत प्रधानजी हजर होतात.)
प्रधान: काय झाले महाराज? इतक्या तातडीनं?....
राजा: हे आपल्या राज्यात काय चालले आहे? भर हमरस्त्यावर एवढा मोठा मोर्चा?.. काय हवंय या आंदोलकाना? आहेत कोण हे?

प्रधान: महाराज, हे आपल्या प्रजेचे स्वघोषित प्रतिनिधी आहेत. बेरोजगारी, विषमता, गरीबी, आर्थिक शोषण, शेतकर्यांच्या आत्महत्या, सेझमुळे येणारी भूमीहीनता, गुन्हेगारी, व्यसनाधीनता, आतंकवाद, नक्षलवाद, स्त्रियांवरील अत्याचार, प्रदुषण, भाषिक व धार्मिक हिंसा, एवढेच नव्हे तर भारनियमन, स्त्रि-भृणहत्या अश्या नव्या कोऱ्या समस्यांचा सामना करताना आपली प्रजा थकली आहे, रंजली आहे, गांजली आहे. हे सर्व प्रतिनिधी आता या निष्कर्षावर आले आहेत कि या साऱ्या समस्यांचे एकच मूळ आहे.
राजा: आणि ते काय आहे?
प्रधान: भ्रष्टाचार! या भ्रष्टाचाराचा "भ"...चुकलो.." भ्र" सुद्धा आपल्या राज्यात दिसता कामा नये असे यांचे मत आहे.
राजा: पण त्यांनी टोप्या का बरं घातल्यात?
प्रधान: गांधी टोपी घातली की आपल्याला कुणीही टोपी घालू शकणार नाही असा त्यांचा दावा आहे. माझ्या मुलानेही नवी कोरी टोपी आणली. गेल्या महिन्यात ५० रु.ला मिळणारी टोपी आता त्यावर नाव छापून रु.२५० ला विकली जाते. हं.. हा मात्र सदाचार आहे बरं का कारण तो चांगल्या कामासाठी केला जातोय असं त्यांचं म्हणणं आहे. आणि त्यावर छापलेलं नावही किती मोठं आहे- " मी नाना आहे"!
राजा: समोर चालताहेत ते बहूधा नाना असावेत. चला आपण त्यांच्याशी बोलुया...
प्रधान: ते शक्य नाही महाराज. नानांशी बोलायचे आहे असे म्हणण्याचा अवकाश, ५-६ हॊशे " मॆ भी नाना" मुझसे बोलो! म्हणत पुढे येतात.
त्यातून नानांचे मॊन-व्रत असल्याने ते हल्ली फ़क्त 'ट्वीटर' वरच बोलतात.
राजा: पण या मिरवणूकीतली काही माणसं ओळखीची वाटताहेत...हा नानांच्या

डाव्या बाजूला कोण चालतोय?
प्रधान: अहो महाराज, त्या एक स्त्री आहेत. आपण विसरलात महाराज, त्या आपल्या राज्यात कोतवाल होत्या. फ़ार मोठ्या कार्यकर्त्या आहेत म्हणे! मुंबईला कोणी भाषणाला बोलावलं की चक्क चालतच गावाहून मुंबईपर्यंत येतात. मात्र बसच्या प्रवासाचा भत्ता घेउन तो त्यांच्या पसंतीच्या सामाजिक कार्यासाठी देतात म्हणे.

राजा: पण....हा तर भ्रष्टाचार...
प्रधान: समाजाचा फ़ायदा... म्हणजे सदाचार असणार.
राजा: आणि ते मागून येणारे वयस्कर गृहस्थ. ?
प्रधान: ते सखाराम दामोदर रडे. ...मराठी चित्रपट सृष्टीचे एक बिनीचे नाव. अहो, चित्रपटात रडण्यात ए.के. हंगलनाही मागे टाकतील हे स.दा.रडे.
राजा: पण मध्यंतरी विदेशी गाडीचा कर चुकवण्याबद्दल यांची चौकशी....
प्रधान: अहो...कधी नाही ते एक मराठी माणूस विदेशी गाडी आणतो आणि सरकार त्यावर करमाफ़ी न देता कर लावते. हे सरकारच भ्रष्टाचार करते असे ते मानतात.
राजा: आणि लोक काय मानतात ?
प्रधान: ज्यांना नाना मानतात त्यांना लोक मानतात !
राजा: आणि ते सफ़ेद शर्ट व निळा टाय घातलेले ?
प्रधान: ते तर आपल्या जुन्या वैद्यकीय पॅनलचे मुख्य डॉ. जांबुवंत महादेव फ़ाडे, सर्जन. २० ते २५ पोटं रोज फ़ाडतात हे डॉ. जा.म.फ़ाडे.
अहो, पाच मिनटात पोट फ़ाडून अर्ध्या तासात संपूर्ण शस्त्रक्रिया संपवतात.
राजा: पण टेबलाखालून दीड- दोन लाख घेतात व नंतरच पेशंट टेबलावर घेतात म्हणे...मधे अनेक मालमत्ता काळ्या पैश्यातून घेतल्याचा त्यांच्यावर आरोप...
प्रधान: पण महाराज... ते खूप दयाळू आहेत. शस्त्रक्रिया अयशस्वी झाल्यास त्याच टेबलाखालून पैसे परत देतात अशी दंतकथा आहे. पुन्हा, शर्ट पहा किती पांढरा आहे. "टाईड" आणि "सर्फ" च्या मॉडेल्सना मुस्कटात मारेल...अश्या स्वच्छ व शुभ्र व्यक्तिमत्वाचं वजन हवंच लोकांवर...
राजा: बरं ते जीन्स आणि गॉगल मधले तरुण- तरुणी हातात ते छोट्याश्या ढाली

सारखं घेऊन ?...
प्रधान: हं...ते ! ती तर आपली ट्वीटर जनरेशन... आणि तुम्ही ज्याला ढाल म्हणताय तो तर जगप्रसिद्ध "आय पॅड". नव युग, नव्या वस्तु व नव्या आंदोलनाची ही सांगड आहे. अर्थात, काही जण आलेत आपल्या ग्रुपमधील मुलींना इम्प्रेस करायला. आंदोलनामुळे आज सगळे बार आपण बंद ठेवायला लावलेत, म्हणून काहीजण विरंगुळा म्हणुनही आलेत. ह्या माध्यमांचं एक बरं आहे. सामाजिक बांधिलकी बद्दल १५ शब्द ट्वीट केले कि फुले - आगरकरांना जन्मभरात न जमलेले प्रबोधन आपण दोन मिनिटात केल्याची फुशारकी मारायला मोकळे. पुन्हा कुणी सोशल नेटवर्कवर वेगळा विचार मांडायचा अवकाश, बिथरलेल्या मधमाश्यांसारखे " रिप्लाईज व कॉमेंट्स " देण्यात यांची तर हातोटी...

राजा: एकुण परिस्थिती अगदीच हाताबाहेर गेलेली दिसतेय. आपण आपल्या शासनाच्या एकुण व्यवस्थेचा विचार करायला हवा. काय बरं करावं ?

प्रधान: आपण ढीग विचार करु. पण म्हणून व्यवस्था थोडीच बदलणार आहे? महाराज, शासनव्यवस्था तुमच्या व आमच्या पलीकडची गोष्ट आहे. अहो, लोकांकडे कुठे वेळ आहे फ़ार दिवस आंदोलन करायला. गणपती, नवरात्र, दिवाळी- दसरा, झालंच तर "अमका डे" " तमका डे" सेलिब्रेट करायला लोक पुन्हा सुरुवात करतील. शेवटी प्रत्येकाला रोजची मजा महत्वाची.
आता एकच करा, वामकुक्षी घ्या, महीनाभर आराम करा. एखाद्या जवळच्या जंगलात शिकारीसाठी मोहीम काढा. तेवढीच जरा मजा!
बरं... जर प्रकरण फ़ारच चिघळलं, तर आपली नेहेमीची हत्यारं आहेतच..., आंदोलकांवर विविध आरोप करणे, त्यांची आर्थिक कोंडी करणे, त्यांचे फ़ोन टॅप करणे, त्यांना स्कँडल्समध्ये गुंतवणे ....
संपूर्ण प्रशासन आणि तिजोरीच्या चाव्या आपल्याच हातात आहेत महाराज...
तेव्हा कृपा करून आपण शयनगृहाकडे प्रय़ाण करावे.

(मोsssठी जांभई देत राजा शयनगृहाकडे निघतो.)